न्यूज़ टाइम्स पोस्ट

वर्ष : 04 अंक : 12 | हिन्दी पाक्षिक | 16 - 30 नवम्बर, 2019 | मूल्य : ₹ 40 | www.newstimespost.com

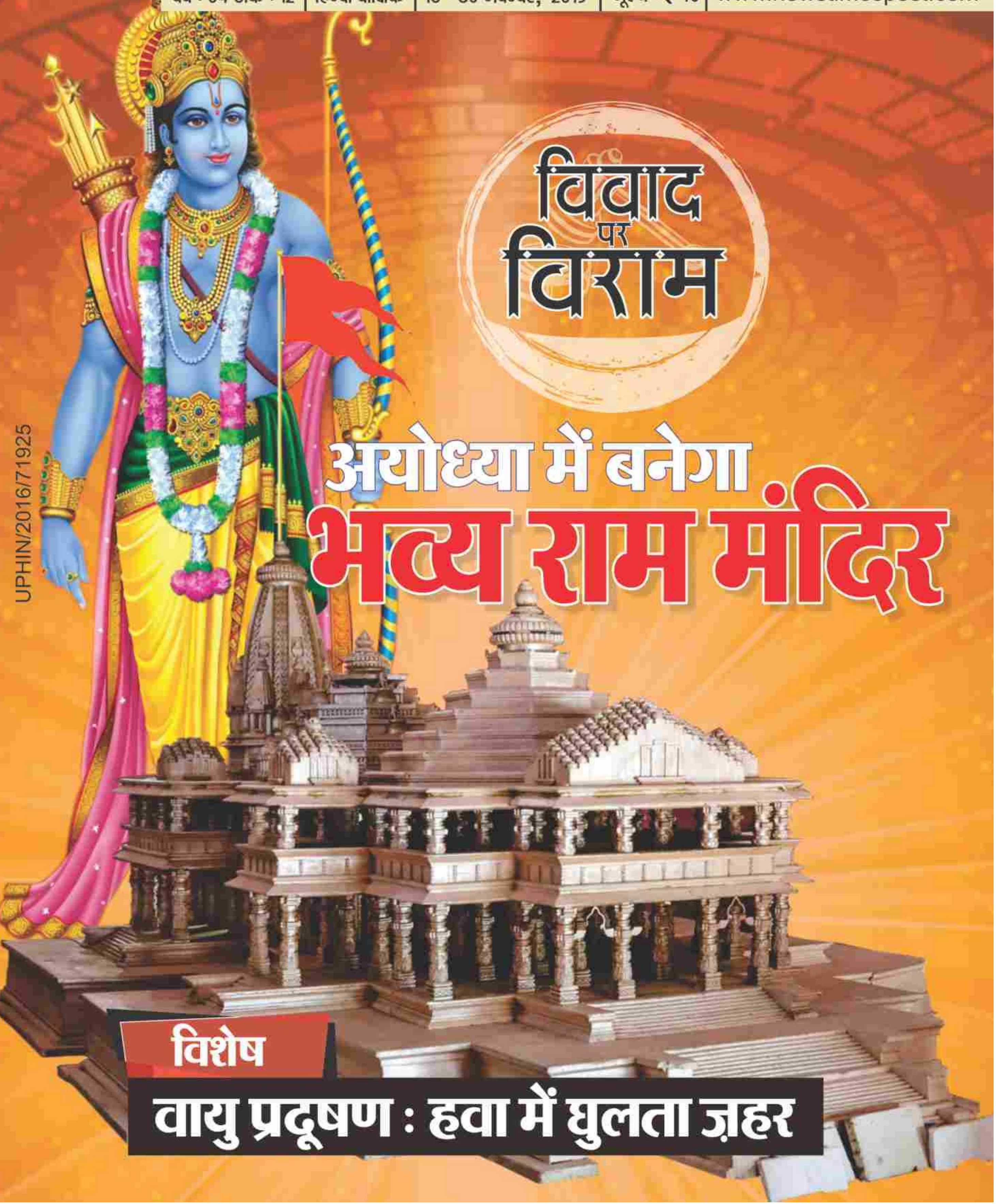

विवाद पर विराम

अयोध्या में बनेगा भव्य राम मंदिर

UPHIN/2016/71925

विशेष

वायु प्रदूषण : हवा में घुलता ज़हर

वायु प्रदूषण की विभीषिका से बचाव जरूरी

आज वैश्विक तापमान व जलवायु परिवर्तन को बढ़ाने के दो मुख्य कारक हैं - वाहनों की बढ़ती संख्या से हाइड्रोकार्बन ईंधन का अनाप-शनाप दोहन और औद्योगीकरण की बेतहाशा दौड़ से रहन-सहन में परिवर्तन। आज एक तरफ जीवनदायिनी ऑक्सीजन देने वाले पेड़ों की कटाई चरम पर है, परंतु उसके लगाने की दर नगण्य है। प्रकृति के साथ अनावश्यक छेड़छाड़ की जा रही है।

डॉ. भरत राज सिंह
महानिदेशक (तकनीकी),
स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेस, लखनऊ
मो. 9415025825

यह सर्वविदित तथ्य है कि वर्तमान में वैश्विक तापमान में बढ़ोतरी व जलवायु परिवर्तन का मुख्य कारण विश्व जनसंख्या में वृद्धि है, जो पिछले एक सदी के भीतर बहुत अधिक बढ़ गई है। अप्रैल 2019 तक विश्व की जनसंख्या 7.7 बिलियन आंकी गई है। दुनिया की आबादी को 1 बिलियन तक पहुंचाने में मानव इतिहास को 2 लाख वर्ष लग गए और पिछले 200 वर्षों के भीतर ही यह 7 बिलियन तक पहुंच गया। उच्चतम जनसंख्या वृद्धि दर 1955 और 1975 के बीच प्रति वर्ष 1.8 फीसदी रही, जबकि 1965 और 1970 के बीच यह 2.1 फीसदी तक बढ़ गई। हालांकि 2010 और 2015 के बीच वृद्धि दर घटकर 1.2 फीसदी रह गई और आगे इसमें और गिरावट का अनुमान है। हालांकि, वैश्विक जनसंख्या अब भी बढ़ रही है और 2050 में लगभग 10 बिलियन पहुंचने का अनुमान है।

आज वैश्विक तापमान व जलवायु परिवर्तन को बढ़ाने के दो मुख्य कारक हैं - वाहनों की बढ़ती संख्या से हाइड्रोकार्बन ईंधन का अनाप-शनाप दोहन और औद्योगीकरण की बेतहाशा दौड़ से रहन-सहन में परिवर्तन। आज एक तरफ जीवनदायिनी ऑक्सीजन देने वाले पेड़ो की कटाई चरम पर है, परंतु उसके लगाने की दर नगण्य है। प्रकृति के साथ अनावश्यक छेड़छाड़ की जा रही है। हमारे वैदिक ग्रंथों वेद व पुराण में प्रकृति के संरक्षण के तमाम सूक्तियां दी गई हैं। उदाहरण के तौर पर - हरे वृक्षों को काटने पर प्रतिबन्ध हमारे धर्मशास्त्रों में वर्णित है। ऐसा कहा गया है कि यह कार्य करने वाला संतान सुख से हीन होता है, क्योंकि वृक्ष को पुत्र के समान स्थान दिया गया था। वृक्षों की श्रेष्ठता के सम्बन्ध में मत्स्य पुराण में वृक्षों के महत्व का निर्देशन किया गया है -

दश कूपो समो वापी, दश वापी समो ह्रदः।
दशह्रद समः पुत्रों, दश पुत्र समोद्रुयः।।

अर्थात् दश कूप निर्माण का पुण्य एक वापी बनाने से, 10 वापी का पुण्य एक तालाब और 10 तालाबों का पुण्य एक पुत्र उत्पन्न करने से तथा 10 पुत्रों का पुण्य एक वृक्ष लगाने से होता है।

इसी प्रकार वृक्ष को न काटने हेतु निम्नलिखित सूक्ति भी मिलती है -

मूले ब्रम्हा तने विष्णू, शाखा रुद्रे महेश्वरो।
पाते-पाते देवानाम, वृक्ष राजा नमस्तुते।।

अर्थात् वृक्ष के जड़ में ब्रह्मा का निवास होता है जो सृष्टि के रचयिता हैं तथा तने में विष्णु का जो पालनहार हैं, शाखाओं में शिव का निवास है, जो शक्ति प्रदान करते हैं और पत्तों में सभी देवी-देवताओं का निवास है, जो हमारी रक्षा करते हैं और धन-धान्य प्रदान करते हैं। ऐसे वृक्ष देव को हम प्रणाम करते हैं।

आज की समस्या जो विकराल रूप में फैल चुकी है, यह कैसे उत्पन्न हुई और इसका क्या निदान है। हम जानते है कि पृथ्वी के चारों तरफ 10-15 किमी की ऊंचाई पर ओजोन की परत फैली हुई है, जिससे सूर्य से पराबैंगनी किरणें धरती पर नहीं आ पाती हैं और सभी जीव-जन्तु कैंसर, हृदय रोग, लिवर आदि की बीमारी तथा लकवा आदि से बच जाते है और फसलों में भी बीमारी आदि से उसके उत्पादन में अधिक नुकसान नहीं होता। इसी प्रकार, वाहनों में लगातार बढ़ोतरी से हाइड्रोकार्बन ईंधन और औद्योगीकरण से ग्रीनहाउस गैस की अधिकता दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। इससे धरती के चारों तरफ 5 से 10 किमी की ऊंचाई पर ये ग्रीनहाउस गैस प्रचुर मात्रा में एकत्र हो रही है। पृथ्वी पर सूर्य की किरणें पड़ने से उत्पन्न रेडिएशन जब धरती से 5-10 किमी ऊपर की ग्रीन हाऊस गैस की मोटी परत से टकराता है तो वह पुनः धरती पर वापस लौट आता है, जिससे वैश्विक तापमान में निरन्तर बृद्धि हो रही है। शोध में यह भी पता चला है कि बरसात व ठण्ड के मौसम के बीच वायुमण्डल में मौजूद पानी की बूंदें बढ़ी हुई ग्रीनहाउस गैस के सतह पर दबाव डालती है, जिससे ऊपरी ग्रीनहाउस गैस पृथ्वी के नजदीक आ जाती है और फॉग (धुएं) के रूप में वायुमंडल में छा जाती है। परिणामस्वरूप हवा में पीएम-2.5 की मात्रा धीरे-धीरे बढ़ती रहती है। पेड़ों पर धूल कणों के कारण उनमें ऑक्सीजन बनाने की प्रक्रिया कम हो जाती है। ऐसे में पेड़ों के तनों-पत्तों की धुलाई आवश्यक है, जिससे कार्बन सोखने की शक्ति उनमें बनी रहे और अधिक से अधिक ऑक्सीजन मिलती रहे।

प्रदूषण से कैसे निपटें?

प्रदूषण की विकट समस्या के दो विकल्प हो सकते हैं, पहला तत्कालिक और दूसरा स्थायी।

तत्कालिक उपाय :

- कृत्रिम बारिश कराई जाए।
- सड़कों, पेड़ों व घरों आदि के आसपास पानी का छिड़काव किया जाए।
- भवन निर्माण व धूल उड़ाने वाले कार्य स्थगित कर दिए जाएं
- कूड़ा कभी न फैलाएं और न ही जलाएं।
- पराली न जलाई जाए और न ही दीवाली तथा शादी आदि में पटाखे जलाए जाएं।
- नजदीकी यात्रा के लिए यथासम्भव पैदल चलें।
- निजी वाहनों का उपयोग कम किया जाए तथा दो से अधिक वाहन रखने वालों पर नगर-पालिका द्वारा अधिक टैक्स लगाएं जाएं।
- कार्यालयों आदि की यात्रा में दो या चार पहिया वाहनों का उपयोग पूल करके हो।

स्थायी उपाय :

- किसी भी सड़क का निर्माण शुरू होने पर बड़े पेड़ लगाए जाएं।
- हाई-वे, एक्सप्रेस-वे आदि के प्रारम्भ पर ही दोनों तरफ के किनारों पर तीन लेयर में पेड़ लगाए जाएं।
- शहर में पार्क व खुले जगह तथा सड़क के किनारे फलदार पेड़, जैसे आम, महुआ, बरगद, पाकड़ आदि लगाए जाएं तथा तालाब भी बनवाए जाएं, जिससे पानी का रिचार्ज व पेड़ों की वृद्धि भी बनी रहे।